प्रादर्श प्रश्न पत्र 2013–14
विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं
सेट–सी

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**
Time- 3 Hours **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।
ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।
iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक
iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 24 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।
v. प्रश्न क्रमांक 6 से 10 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में लिखना है।
vi. प्रश्न क्रमांक 11 से 17 तक प्रत्येक प्रश्न के लिये 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।
vii. प्रश्न क्रमांक 18 से 22 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।
viii. प्रश्न क्रमांक 23 तथा 24 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.
ii. Please the instructions carefully before writing the answer.
iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.
iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 24.
v. Q. No. 6 to 10 carry 2 marks each and answer should be given in about 30 words.
vi. Q. No. 11 to 17 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.
vii. Q. No. 18 to 22 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.
viii. Q. No. 23 and 24 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
Objective Type Questions

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनिए –

(अ) सी.यू. की (भारत यात्रा विवरण) का लेखक था –

(i) ह्वेंगसांग (ii) फाह्यान

(iii) इत्सिंग (iv) तारानाथ

(ब) सिन्धु सभ्यता से प्राप्त मुहरों पर निम्न में से कौन सा पशु अंकित नहीं है।

(i) हाथी (ii) बारहसिंगा

(iii) वृषभ (iv) अश्व

(स) तराइन का द्वितीय युद्ध कब हुआ था –

(i) 1192 ई. (ii) 1191 ई.

(iii) 1077 ई. (iv) 1078 ई.

(द) भूदान आंदोलन आरंभ किया –

(i) महात्मा गांधी (ii) आचार्य विनोबा भावे

(iii) जय प्रकाश नारायण (iv) आचार्य जे.बी. कृपलानी

(इ) रानी अवन्ति बाई का संबंध किस रियासत से था –

(i) ग्वालियर (ii) गढ़ामण्डला

(iii) रामगढ़ (iv) झांसी

Choose the correct answer in the following.

(a) The writer of Si-U-Ki (Visit to India) was -

(i) Hueng Sang (ii) Fa-Hein

(iii) Itsing (iv) Tarahath

(b) Which of the following animal is not engraved on the coins of Indus Civilization -

(i) Elephant (ii) Stag

(iii) Taurs (iv) Horse

(c) Second battle of Tarrain was fought in the year -

(i) 1192 AD (ii) 1191 AD

(iii) 1077 AD (iv) 1078 AD

(d) Bhudaan movement was started by -

(i) Gandhiji (ii) Acharya Vinoba Bhave

(iii) Jaiprakash Narayan (iv) J.B. Kriplani

(e) Rani Awanti Bai belonged to -

(i) Gwalior (ii) Ramgarh

(iii) Gadhamandala (iv) Jhansi

प्रश्न 2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(i) इतिहास के जनक..................को कहते है।

(ii) गण का प्रमुख.................कहलाता था।

(iii) पृथ्वीराज रासो के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति............में हुई थी।

(iv) ....कांड असहयोग आन्दोलन के स्थगन का कारण बना।

(v) वास्कोडिगामा भारत के...............बंदरगाह पहुंचा था।

Fill in the blanks.

(i) The father of history is called............

(ii) Head of the province was called..........

(iii) According to Prithiviraj Raso Rajputs originat from...........

(iv) ....incident was the reason of pastponement of Non-Cooperation Movement.

(v) Vasco Digamma arrived on the.............port in India

प्रश्न 3. सही जोड़ियां बनाइये–

	अ	–	**ब**
(अ)	विशाखदत्त	–	झाबुआ
(ब)	सिराजुददौला	–	भारत में फ्रांसीसी गर्वनर
(स)	डुप्ले	–	वन्देमातरम

(द)	बंकिमचन्द्र चटर्जी	–	बंगाल का नवाब
(इ)	चन्द्रशेखर आजाद	–	मुद्रा राक्षस

Match the following.

	A	-	B
(a)	Vishakhdatt	-	Jhabua
(b)	Sirajuddola	-	French Governor of India
(c)	Duple	-	Vande Mataram
(d)	Bankim Chandra Chatterji	-	Nawab of Bengal
(e)	Chandrashkeshar Azad	-	Mudrarakshash

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए।

1. बंगाल का सेठ जो सिराजुददौला के विरूद्ध षडयंत्र में शामिल था?
2. ताजमहल का निर्माण कितने वर्षों में हुआ?
3. रक्त ओर लोहे की नीति किस सुल्तान की थी?
4. भारत छोड़ो आन्दोलन के समय गांधी जी ने क्या नारा दिया है?
5. शिशुनाग वंश का अन्त किसने किया था?

Write the Answer of the following questions in a sentence or in a word.

1. Who was the Bengali Seth involved in the Conspiracy against Sirajuddloa.
2. In now may years was the Taj Mahal built?
3. Who introduced the policy of "Blood and Iron".
4. Which Slogan Gandhiji gave during the Quit India Movement.
5. Who gave a leath blow to the Shishunag dynasty?

प्रश्न 5. निम्नलिखित वक्यों में सत्य एवं असत्य बताइये –

(i) दास वंश का प्रथम शासक इल्तुतमिश था।

(ii) मगध के नंदवंश का अन्तिम शासक महापदम था।

(iii) औरंगजेब का बचपन का नाम सलीम था।

(iv) शिवाजी की मृत्यु 1680 ई. में हुई थी।

(v) मैगस्थनीज ने भारतीय समाज को सात जातियों में विभक्त माना था।

Write true or false.

(i) Iltutmish was the first ruler of Slave Dynesty.

(ii) The lest ruler of Nandvansh of Magadha was Mahapadam.

(iii) The chiedhod naem of Aurahgzeb was salim.

(iv) Shivaji died in 1680 AD

(v) Megasthanese considercd the Indian Society to be divided in to seven casts.

प्रश्न 6. प्राचीन काल में चीन से कितने यात्री भारत आए एवं उनके नाम क्या थे?

How many travellars from Chaina visited India during the anciant period? Give there names.

अथवा
Or

मेगास्थनीज किस मौर्य शासक के काल में भारत आया एवं उसने भारत की कितनी जातियों के बारे में अपनी पुस्तक में वर्णन किया?

During the reign of the which Morya King did Megasthanese visit India and how many castes did he descirbe in his book.

प्रश्न 7. ऋग्वेद में राजा को क्या कहा जाता है एवं उसकी तुलना किससे की गई है?

How is the king in the Rigved addressed wich whome his is compared.

अथवा
Or

ऋग्वैदिक काल में दण्ड विधान कैसा था एवं न्याय करने का अधिकार किसका था?

How was the Penal Code during the Rigved peirod. Who had the power to imposed panishment.

प्रश्न 8. चन्दबरदाई कौन था? उसने किस ग्रन्थ की रचना की?

Who was Chanbardai? Which book did he write?

अथवा
Or

चन्दवंशी चन्देलों का उदय कहां हुआ? उनकी राजधानी का नाम बताइये।

Where did the Chandels of the Chandra Dynasty emerge. Give the name of their Capital.

प्रश्न 9. किस मुगलकालीन शासक ने ताजमहल का निर्माण कितने रूपये की लागत से करवाया था?

Which Mugal King build the Tazmahal. How much cost did he incur?

अथवा
Or

अकबर के दरबार में अबुल फजल ने किन दो प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना की?

Which tow famous books were written by Abbul Fazal during the reign of Akbar?

प्रश्न 10. थॉमस स्टीफन्स कौन था और वह भारत कब आया?

Who was Tomos Stephan? When did hi arrive in India?

अथवा
Or

इंग्लैण्ड के स्वतंत्र व्यापारियों की संख्या कितनी थी? उन्होंने किस ईसवी में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना की?

How many independent bussinessmen were there in England? In which year the established the Est India Company?

प्रश्न 11. प्राचीन भारत का इतिहास जानने के लिए अभिलेखों का क्या महत्व है?

What is the importance of Archives in study of Ancient Indian History?

अथवा

Or

नवपाषाणकाल में कृषि एवं पशुपालन से मानव जीवन में क्या परिवर्तन हुए।

What changes did the agriculture and animal rearing bring about in the life of New Stone Age.

प्रश्न 12. हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना व्यवस्था को संक्षेप में लिखिए।

Write in short the town planing of the Harappan petle?

अथवा

Or

वैदिक कालीन आश्रम व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

Throw light on the Ashram system during the Vadice period?

प्रश्न 13. गांधार कला शैली की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

State the main charactries of the Gandhar Art sytle?

अथवा

Or

गुप्तकाल में हुए विज्ञान के विकास का वर्णन कीजिए।

State the Devlepment of the science during the Gupta Period?

प्रश्न 14. मराठों के उत्कर्ष के चार कारण लिखिए।

Give four reasons for the rise of Marathas?

अथवा

Or

पुरन्दर की संधि की शर्तों का उल्लेख कीजिए।

Write the clauses of the Treaty of Purandar?

प्रश्न 15. भारत में पुर्तगालियों के पतन के चार कारण लिखिए।

Write any four reasons for decline of Portuguese in India?

अथवा

Or

प्लासी के युद्ध के कोई चार परिणाम लिखिए।

Write any four consequences of the battle of Plassy

प्रश्न 16. 1857 की क्रांति के क्या परिणाम हुए?

Explain the cansequences of of 1857 Revolt?

अथवा

Or

19वीं सदी के भारत के पुनर्जागरण के किन्हीं पांच कारणों की व्याख्या कीजिए।

Explain any five cause of the India. Renaissance in 19th Century?

प्रश्न 17. खजुराहो के मंदिरों की कलात्मक विशेषताओं को लिखिए।

State the Artistic Features of temple of Khajuraho?

अथवा

Or

मध्यप्रदेश की मूर्तिकला के बारे में संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न 18. सम्राट अशोक ने जनता की भलाई के लिए कौन–कौन से तरीके अपनाये?

Which system were adopted by the king Ashok for the welfar of people?

अथवा

Or

मथुरा कला शैली की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

Write the main charactries of Mathura style of the Art?

प्रश्न 19. सल्तनत काल में भक्ति आंदोलन के उदय के कोई पांच कारण लिखिए।

Write any five causes for rise of Bhakti Movement during Sultnate Period?

अथवा

Or

मोहम्मद तुगलक की योजनाओं की असफलता के कारणों का वर्णन कीजिए।

Describe the reasons for the failure of schemes of Mohammad Tughlak.

प्रश्न 20. शिवाजी की अष्टधान व्यवस्था के विषय में लिखिए।

Write about the Ashatdan system of Shivaji.

अथवा

Or

शिवाजी के चरित्र एवं कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate the character and works of Shivaji.

प्रश्न 21. अंग्रेजी शासन के आर्थिक प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

Describe the Economic effects of the English Rule?

अथवा

Or

हिन्दू धर्म और समाज हेतु आर्य समाज के योगदान की व्याख्या कीजिए।

Discuss the contribution of the Arya Samaj in the reforms in the Hindu Religion and Society.

प्रश्न 22. भारत छोड़ो आंदोलन में मध्यप्रदेश का योगदान लिखिए।

State the contribution of Madhya Pradesh in the Quit India Movmeent?

अथवा

Or

मध्यप्रदेश में प्राप्त गुप्त कालीन अभिलेखों का वर्णन करते हुए किन्हीं तीन पर विस्तार से लिखिए।

Describing the Gupta period Archives from Madhya Pradesh, write and detial about any three.

प्रश्न 23. महाराणा प्रताप ने किस प्रकार मुगलों का प्रतिरोध किया? समझाइये।

Explain how Maharana Pratap resisted the Moghuls?

अथवा

Or

दीन–ए–इलाही धर्म के सिद्धांत लिखिए।

Write the Principles of Din-e-Elahi?

प्रश्न 24. भारतीय स्वाधीनता अधिनियम की छः मुख्य धाराएं लिखिए।

Write the six main clauses of the Indian Independence Act.

अथवा

Or

भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना के उदय होने के छः प्रमुख कारण लिखिए।

Write the six main reasons for the rise of National Conscience among the Indians Movement?

– – – – – –

आदर्श उत्तर

इतिहास
History

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

उत्तर 1. सही विकल्प–

(अ) फाह्यान

(ब) अश्व

(स) 1192 ई.

(द) आचार्य विनोबा भावे

(इ) रामगढ़

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 2. रिक्त स्थान –

(i) हेरोडोट्स

(ii) राजा

(iii) अग्निकुण्ड से

(iv) चौरी–चौरा

(v) हृदय स्थल

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 3. सही जोडियां –

	अ	**–**	**ब**
(अ)	विशाखदत्त	–	मुद्रा राक्षस
(ब)	सिराजुददौला	–	बंगाल का नवाब
(स)	डुप्ले	–	भारत में फ्रांसीसी गर्वनर
(द)	बंकिमचन्द्र चटर्जी	–	वन्देमातरम

(इ) चन्द्रशेखर आजाद – झाबुआ

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 4. एक वाक्य में उत्तर –

1. अमीर चन्द बंगाल का सेठ सिराजुददौला के विरूद्ध षडयंत्र में शामिल था।
2. ताज महल का निर्माण 22 वर्षों में हुआ।
3. रक्त और लोहे की नीति बलबन सुल्तान की थी।
4. भारत छोड़ो आन्दोलन के समय गांधी जी ने करो या मरो का नारा दिया है।
5. महापदम ने शिशुनाग वंश का अन्त कर दिया।

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 5. सत्य/असत्य –

(i) असत्य

(ii) असत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 6. प्राचीन काल में चीन से तीन यात्री भारत आए एवं उनके नाम फाह्यान, युवानच्वांग एवं इत्सिंग था।

2 अंक

(उपरोक्तानुसार लिखने पर 2 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

मेगास्थनीज मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के शासनकाल में भारत आया एवं अपनी पुस्तिक इंडिका के सात जातियों का उल्लेख किया है।

2 अंक

(उपरोक्तानुसार लिखने पर 2 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 7. ऋग्वेद में राजा को राजन कहा जाता था एवं उसकी तुलना इन्द्र और वरूण से की गई है।

2 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने कुल 2 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

ऋग्वेदिक काल में दण्ड विधान कठोर नहीं था। दण्ड राजा के आदेश से मिलता था और राजा पुरोहित की सलाह से न्याय करता था।

2 अंक

(उपरोक्तानुसार लिखने पर 2 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 8. चन्दबरदाई एक राज कवि था जो पथ्वीराज चौहान के राज दरबार में था। इसने पथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ की रचना की।

2 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 2 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

नवीं शताब्दी के प्रारंभ में आज कल के बुन्देलखण्ड में चन्द्रवंशी चन्देलों की शक्ति का उदय हुआ। चन्देलों की राजधानी खजुराहों थी।

2 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 2 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 9. मुगलकालीन शासक शाहजहां ने अपनी बेगम मुमताज की याद में 9 करोड़ रूपये की लागत से ताजमहल का निर्माण करवाया था।

2 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर 2 अंक पूर्ण प्राप्त होंगे।

अथवा

अतुल फजल ने ''आइने अकबरी और अकबर नामा'' दो प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की।

2 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर 2 अंक पूर्ण प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. थॉमस स्टीफन्स प्रथम अंग्रेज था, जिसे भारत वर्ष की भूमि पर बसने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह 1579 ई. में गोवा के जेसूर कॉलेज का प्राध्यापक नियुक्त हुआ।

2 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर 2 अंक पूर्ण प्राप्त होंगे।

अथवा

इंग्लैण्ड के स्वतंत्र व्यापारियों की संख्या 100 थी, 31 दिसम्बर 1600 ई. को ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना की गई।

2 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर 2 अंक पूर्ण प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. अभिलेख प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के महत्वपूर्ण और प्रमाणिक स्त्रोत माने जाते है, क्योंकि अभिलेख समकालीन होते है। जिस राजा अथवा राज्य के विषय में अभिलेख पर लिखा होता है, अभिलेख की रचना भी उसी राजा के शासनकाल में की गई होती है।

अभिलेखों से तात्कालीन राजीतिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त अभिलेख राज्य की सीमाओं और राजा के व्यक्तित्व के विषय में भी सटीक जानकारी प्रदान करते है।

डॉ. रमेश चन्द्र मजमूदार ने लिखा है ''अभिलेख समसामयिक होने के कारण विश्वसनीय प्रमाण है और उनसे हमें सबसे अधिक सहायता मिलती है।'' अभिलेख विभिन्न रूपों में प्राप्त हुए है, शिला पर लिखे गए अभिलेख को शिला–लेख, स्तम्भ पर लिखे गये अभिलेख को स्तम्भ–लेख, ताम्र पत्र पर लिखे गये अभिलेख को ताम्र पत्र–लेख, मूर्ति पर लिखे गए अभिलेख को मूर्ति–लेख कहा जाता है।

प्राचीन भारत पर प्रकाश डालने वाले अभिलेख अधिकांशतः पाली, प्राकृत और संस्कृत भाषाओं में लिखे गए है। लेकिन कुछ अभिलेख तमिल, मलयालम, कन्नड़ व तेलगु भाषाओं में भी लिखे गये है। अधिकांश अभिलेखों की लिपि ''ब्राह्मी'' है, जबकि कुछ अभिलेख ''खरोष्ठी'' लिपि में भी लिखे हुए है। सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य शासक अशोक के है।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

नव–पाषाण काल में मानव ने तीव्रता से प्रगति की जिससे उनके मानव जीवन में कृषि एवं पशुपालन का कार्य करने से परिवर्तन हुए वे निम्न है :–

1. **कृषिः–** इस काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इस काल का मानव कृषि करने लगा था। इससे पूर्व के मानव को कृषि का ज्ञान नहीं था। अतः उस प्राचीन युग में यह कार्य एक महान क्रांति कहा जा सकता है। मानव के घुमक्कड़ी जीवन को समाप्त कर दिया इस काल की मुख्य उपज– गेहूं, जौ, मक्का, बाजरा, कपास आदि है।
2. **पशुपालनः–** इस काल में मानव ने पशुपालन करना सीख लिया था। मानव का पहला पालतु पशु कुत्ता था। धीरे–धीरे मानव ने बकरी, घोड़ा, भेड़, भैंस, गाय व बैल आदि को भी पालना शुरू कर दिय। पशुपालन से मानव को बहुत से लाभ हुए। उसे नियमित रूप से दूध और मांस मिलने लगा तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में सुविधा हो गई।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 12. हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ों की खुदाई से पता चलता है कि सिंधु सभ्यता एक नगरीय व्यवस्था थी। सिंधु सभ्यता में नगर एक निश्चित योजना के अनुसार बनाये जाते थे। नगरों में चौड़ी सड़के पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर जाती थी। जो प्रायः एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। इस प्रकार प्रत्येक नगर अनेक खण्डों में अर्थात मुहल्लों में बांटा जाता था। मोहनजोदड़ों में एक सड़क 11 मीटर की प्राप्त हुई है संभवतः यह राजमार्ग थी। नगर में जल निकासी की पर्याप्त व्यवस्था थी। मकान पक्की ईंटों के बने थे।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

वैदिक कालीन आश्रम व्यवस्था निम्न प्रकार से विभाजित की गई थी –

1. **ब्रह्मचर्य आश्रम :–** जिसमें मनुष्य जीवन के प्रथम पच्चीस वर्ष कठोर नियमों का पालन करते हुए विद्या और ज्ञान की प्राप्ति हेतु गुरूकुल में बिताता था।
2. **गृहस्थ आश्रम :–** इसमें मनुष्य धर्मानुसार अर्थ उपार्जन करता था एवं सामाजिक एवं धार्मिक कर्तव्यों को पूर्ण करता हुआ दूसरे पच्चीस वर्ष व्यतीत करता था।
3. **वानप्रस्थ आश्रम :–** इसमें वह गृहस्थी का भार अपने पुत्रों को सौंपकर मनुष्य क्रमशः सामाजिक जीवन से दूर होता जाता है एवं त्याग, तप, साधना का जीवन व्यतीत करता था।
4. **सन्यास आश्रम :–** इसमें मनुष्य अपने समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर ब्रह्म चिन्तन करते हुए मुक्ति की तैयारी करता है।

(उपरोक्तानुसार चार बिन्दु एवं अन्य का वर्णन करने किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 13. गांधार कला की मुख्य विशेषताएं :–

1. गांधार कला के विषय भारतीय है तथा तकनीकी यूनानी है।
2. गांधार कला की मूर्तियां प्रायः स्लेटी पत्थर से निर्मित है।
3. इस शैली के अन्तर्गत बुद्ध को सिंहासन पर बैठे दिखाया गया है।
4. इस शैली में मूर्तियां सिलवटदार वस्त्र धारण किये है।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं का विस्तार करने पर 2 अंक कुल पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

गुप्तकाल में विज्ञान का विकास :–

गुप्तकाल में अंकगणित, रेखाचित्र, बीजगणित, चिकित्साशास्त्र, रसायन शास्त्र एवं ज्योतिष विज्ञान की उन्नति हुई। इस काल के महान गणितज्ञ आर्य भट्ट ने अपने ग्रन्थ ''आर्य भट्टीयम्'' में दशमलव प्रणाली का वर्णन किया है और अंकगणित व बीजगणित के अनेक सिद्धांत प्रतिपादित किए है।

आर्य भट्ट ने प्रमाणित किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है तथा पृथ्वी व सूर्य के मध्य चन्द्रमा आ जाने से ग्रहण होता है। गुप्त काल के ज्योतिषाचार्य व धातु विज्ञान के पण्डित वराह मिहिर ने अपनी रचना ''वृहत्संहिता'' में नक्षत्र, वनस्पतिशास्त्र, भूगोल आदि विषयों का विशद विवेचन किया है।

ब्रम्हगुप्त नक्षत्र वैज्ञानिक थे, जिन्होंने प्रमाणित किया कि सभी वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती है और पृथ्वी सभी वस्तुओं को अपनी ओर खींचती है।

गुप्तकाल में धातु विज्ञान विकसित थी। दिल्ली के समीप महरौली में कुबुबमीनार के पास स्थित लौहस्तम्भ गुप्तकाल का है इस लौह स्तम्भ में अभी तक जंग नहीं लगा है।

गुप्त काल में चिकित्सा विज्ञान, मूल्य विज्ञान, पशु विज्ञान पर अनेक ग्रन्थ लिखे गए। जिसमें हस्ति–आयुर्वेद, अश्व–शास्त्र, नवनीतकम् आदि है।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 14. मराठों के उत्कर्ष के निम्न कारण है :–

1. **प्राकृतिक कारण :–** महाराष्ट्र की भूमि बंजर, पहाड़ी और कम उपजाऊ है, वहां वर्षा की कमी रहती है, इस कारण जीवकाउपार्जन के लिए मराठों को अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता था। इस कारण मराठे परिश्रमी, कठोर तथा बहादुर बन गये, वहां का पहाड़ी क्षेत्र किलों का काम करता था इस क्षेत्र में वे शत्रुओं को सहजता से पराजित कर देते थे तथा लूटपात कर पहाड़ियों में छिप जाते थे।
2. **धार्मिक जागृति :–** महाराष्ट्र में अनेक धर्म सुधारक संत हुए जिन्होंने जाति भेदभाव को दूर किया तथा मराठों को एकता के सूत्र में बांधा।
3. **दक्षिण में मुगलों की कमजोरी :–** दक्षिण मे मुगलों की स्थिति कमजोर थी इस दुर्बलता का मराठों ने भरपूर फायदा उठाया। मुगलों ने कभी भी दक्षिण में निर्णायक युद्ध नहीं किया इस कारण मराठों को संगठित होने का अच्छा अवसर मिला।
4. **सैनिक कारण :–** दक्षिण के मुस्लिम साम्राज्य में बड़ी संख्या में मराठा सैनिक कार्य करते थे, इसलिए उन्हें प्रशासकीय कार्य और सैनिक शिक्षा का पर्याप्त ज्ञान था। इस अनुभव ने उन्हें मुगल साम्राज्य से लोहा लेने की शक्ति प्रदान की।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार चार बिन्दु एवं अन्य का वर्णन करने किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

पुरन्दर की संधि 1665 ई. को शिवाजी एवं जयसिंह के मध्य हुई। संधि की शर्तें इस प्रकार है :–

1. शिवाजी ने अपने 35 दुर्गों में से 4 लाख हूण की आय वाले 23 दुर्ग मुगल सम्राट को दे दिये।
2. 1 लाख हूण की आय वाले 12 दुर्ग शिवाजी के पास छोड़ दिये गये।
3. शिवाजी ने अपने पुत्र शम्भा जी को 5 हजार का मनसबदार बनाकर मुगल सेना में रहने हेतु भेजा।
4. शिवाजी मुगलों के पक्ष में बीजापुर से युद्ध करेंगे।

(उपरोक्तानुसार चार बिन्दु एवं अन्य का वर्णन करने किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 15. भारत में पुर्तगालियों के पतन के निम्न कारण थे :–

1. **धार्मिक असहिष्णुता :–** भारत में पुर्तगालियों का व्यापार स्थापित होते ही उन्होंने धार्मिक असहिष्णुता का परिचय दिया। उन्होंने हिन्दुओं व मुसलमानों को जबरन ईसाई बनाना प्रारंभ कर दिया। जिससे लोगों की सहानुभूमि उनके प्रति समाप्त हो गई और पतन का एक कारण बनी।
2. **व्यापारियों के हितों के विरूद्ध कार्य :–** पुर्तगालियों ने अपने व्यापारिक हितों के लिये सभी प्रकार के अनैतिक कार्यों को किया जिससे विदेशी राजा और जनता उनकी विरोधी हो गई।
3. **ब्राजील को बसाने पर ध्यान :–** नव दक्षिणी अमेरिका में ब्राजील की खोज की गई तो पुर्तगालियों का सारा ध्यान उसको बसाने में लगा। इससे पूर्वी देशों में उन्होंने कम दिलचस्पी ली। फलस्वरूप पूर्वी देशों पर से उनकी पकड़ ढ़ीली पड़ गई।
4. **निर्बल सैनिक शक्ति :–** पुर्तगालियों की नौ सैनिक शक्ति डच एवं इंग्लैण्ड आदि के मुकाबले कमजोर थी जो उनके पतन का कारण बनी।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार चार बिन्दु एवं अन्य का वर्णन करने किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

प्लासी के युद्ध के निम्न परिणाम निकले :—

1. प्लासी के युद्ध के पश्चात बंगाल पर अंग्रेजों का पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया।
2. प्लासी के युद्ध के पश्चात बंगाल में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी के गौरव में वृद्धि हुई।
3. प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजों को भारत विजय के लिए और अधिक प्रोत्साहित किया।
4. प्लासी के युद्ध के पश्चात कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा में स्वतंत्र व्यापार करने की छूट मिल गई।

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य 4 परिणाम लिखने पर प्रत्येक पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे— 1+1+1+1)

उत्तर 16. **भारत छोड़ो आन्दोलन में म.प्र. का योगदान :—**

1942 ई. को अखिल भारतीय कांग्रेस ने अंग्रेजों के विरूद्ध भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पारित किया। इस भारत छोड़ों प्रस्ताव ने देश के वातावरण को एकदम गर्म कर दिया। 9 अगस्त 1942 ई. को महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अब्दुल आजाद, सरदार पटेल, वल्लभ भाई पटेल तथा आचार्य कृपलानी सहित कांग्रेस कार्य समिति के अनेक सदस्यों को गिरफ्तार कर अज्ञात स्थानों पर ले जाया गया।

मध्यप्रदेश में 9 अगस्त 1942 ई. को जैसे ही महात्मा गांधी व अन्य नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार जनमानस को प्राप्त हुआ तो समस्त प्रदेश में स्थान—स्थान पर लोगों में आक्रोश फूट पढ़ा।

जबलपुर में 9 अगस्त को ही स्थापित नेताओं ने बैठक करके एक सप्ताह तक पूर्ण हड़ताल का निर्णय लिया। अंग्रेज अधिकारियों ने स्थिति से निपटने के लिए नगर में धारा–144 लगाकर जनसभाओं को प्रतिबंधित कर दिया। शासन की इस कार्यवाही से जनमानस में और अधिक उत्तेजना फैल गई। आन्दोलनकारियों ने प्रतिक्रिया स्वरूप जगह–जगह टेलीफोन के तार काटे, रेल की पटरियां उखाड़ी और शासकीय इमारतों को क्षतिग्रस्त कर दिया।

आन्दोलनकारियों ने स्थान–स्थान पर धारा 144 को तोड़ा। विशाल जुलूस निकाले और सार्वजनिक सभाएं आयोजित की। पुलिस द्वारा दर्दनाक दमनात्मक कार्यवाहियां की गई अनेक लोग गिरफ्तार किये गये, अनेक घायल हुए व शहीर भी हुए।

ग्वालियर रियासत में भी भारत छोड़ो आन्दोलन ने शीघ्र ही उग्र रूप धारण कर लिया। ग्वालियर रियासत तथा उज्जैन, शाजापुर, मन्दसौर, नीमच, भिण्ड, मुरैना आदि के गांव–गांव ने इस आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया।

9 अगस्त 1942 ई. को जब महात्मा गांधी तथा अन्य प्रमुख नेताओं को गिरफ्तारी का समाचार इन्दौर पहुंचा, तब वहां स्थिति अत्यंत तनावपूर्ण हो गई। राष्ट्रवादी कार्यकर्ता सड़कों पर निकल आये पूर्ण हड़ताल की घोषणा की गई और जुलूस निकाले गये जिनमें ''करो या मरो'' तथा ''भारत छोड़ो'' के नारे लगाये गये।

इन्दौर के वस्त्र उद्योग के श्रमिक तथा छात्र भी इस आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। इस विवेचना से स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में म.प्र. के देशभक्तों और क्रांतीवीरों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

मध्यप्रदेश में गुप्त कालीन अभिलेख :–

मध्यप्रदेश के सागर जिले में स्थित एरण नामक स्थान से चन्द्रगुप्त का एक लेख प्राप्त हुआ है। जो खंडित अवस्था में है। इसमें समुद्रगुप्त को पृथु, राघव आदि राजाओं से बढ़कर दानी कहा गया है। जो प्रसन्न होने पर कुबेर तथा रूष्ट होने पर यमराज के समान था।

मध्यप्रदेश में गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय के तीन अभिलेख पूर्वी मालवा क्षेत्र से प्राप्त हुए है जिनमें परोक्ष रूप से शत्रु विजय की सूचना मिलती है। इनमें प्रथम अभिलेख भेलसा के समीप उदयगिरी पहाड़ी से मिलता है जो इसके संधि विग्रहिक सचिव वीरसेन का है। इस अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि वह संपूर्ण पृथ्वी को जीतने की इच्छा से राजा के साथ इस स्थान पर आया था। गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय की मृत्यु के बाद उसका पुत्र कुमार गुप्त साम्राज्य का शासक बना। उसके शासन काल से संबंधित मध्यप्रदेश में प्राप्त अभिलेखों की स्थिति भिन्न है :–

1. **मन्दसौर अभिलेख :–** मन्दसौर प्राचीन पश्चिमी मालवा का हिस्सा था। इस अभिलेख में विक्रम संवत 529 (473 ई.) की तिथि अंकित है। जिसकी रचना संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान वत्यभट्टि थे।
2. **सांची अभिलेख :–** इस अभिलेख में यहां आर्य संघ को धन दान में दिये जाने का उल्लेख है।
3. **उदयगिरी गुहालेख :–** इस अभिलेख में शंकर नामक व्यक्ति द्वारा इस स्थान पर पाशर्वनाथ की मूर्ति स्थापित किये जाने का विश्रण है।
4. **तुमैन अभिलेख :–** यह अभिलेख गुना जिले से प्राप्त हुआ है। कुमार गुप्त के पश्चात उसका पुत्र स्कन्दगुप्त गुप्त साम्राज्य का शासक बना। उसके शासन काल का एक अभिलेख मध्यप्रदेश के रीवा जिले में स्थित सुपिया नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख 'सुपिया के लेख' नाम से जाना जाता है। इस लेख में गुप्तों की वंशावली मिलती है।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 17. मध्यप्रदेश के खजुराहों जिले में स्थित मंदिरों का निर्माण चंदेल शासकों द्वारा किया गया। यहां समूह में लगभग 30 मंदिर है। यह मंदिर नागर कला शैली में निर्मित है। खजुराहों के मंदिरों में कन्दरिया महादेव का मंदिर, चतुर्भुज वैष्णों मंदिर, विश्वनाथ का मंदिर, आदिनाथ के मंदिर प्रमुख है। मंदिरों के मुख्य द्वार पर ही अलंकरण है।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

मध्यप्रदेश में मूर्तिकला के सर्वोत्तम नमूने सांची में है। इसके अलावा बेसनगर में प्रापत गुंगा का फलक अत्यंत सुंदर है। ग्वालियर के निकट उपलब्ध सूर्य की मूर्ति शांति, तेज और प्रताप का प्रतीक है। विशाल और बलिष्ठ सूर्य देवता प्रसन्नतापूर्वक हाथ उठाकर उन्हें आर्शीवाद दे रहे है। विदिशा के निकट उदयगिरि की एक गुफा के द्वार पर विष्णु के वराह अवतार की मूर्ति है। खजुराहों के मंदिरों की मूर्तिकला आकर्षक, मनोहारी तथा कला की उच्चकोटि की कृति है। इनमें कंदरिया महादेव के मंदिर की मूर्तियां उच्चकोटि की है।

(उपरोक्तानुसार वर्णन करने किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 18. सम्राट अशोक ने जनता की भलाई के निम्नलिखित तरीके अपनाए –

1. चिकित्सालय की व्यवस्था – अशोक ने मनुष्यों एवं पशुओं के लिए अलग–अलग चिकित्सालय की व्यवस्था करवाई थी।
2. वृक्ष एवं धर्मशालाओं का निर्माण – अशोक ने सड़कों के दोनों किनारों पर छायादार वृक्ष लगवाये एवं धर्मशालाओं का निर्माण करवाया।
3. राजुकों की नियुक्ति – अशोक ने जनता में धर्म एवं परोपकार का प्रसार करने हेतु राजुक नामक कर्मचारी की नियुक्ति की।

4. असहायो के लिए दान व्यवस्था – अशोक ने विधवाओं असहायों एवं वृद्धों हेतु पृथक से दान की व्यवस्था की।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

मथुरा कला शैली की विशेषताएं :–

1. मथुरा कला शैली की मूर्तियां बलुए पत्थर की है।
2. गांधार कला की भांति मथुरा कला के अन्तर्गत भी महात्मा बुद्ध के चारों ओर प्रभामण्डल है।
3. मथुरा कला की मूर्तियों में महात्मा बुद्ध मुण्डित शीश है उनके मुख पर मूंछे नहीं है।
4. मथुरा कला की मूर्तियों में विशालता व भौतिकवादिता है लेकिन आध्यात्मिकता नहीं है।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 19. भक्ति आन्दोलन के निम्नलिखित कारण है :–

1. **हिन्दु धर्म का जटिल होना :–** हिन्दु धर्म में यज्ञ, कर्मकाण्ड, पूजा पाठ, उपवास आदि धार्मिक क्रियाओं की जटिलता को साधारण जनता सरलता से निभा नहीं पाती थी, जबकि भक्ति मार्ग सरल था इसलिए यह लोक प्रिय होता गया।
2. **दीर्घकालीन पराधीनता :–** सल्तनकाल में हिन्दू अपनी पराधीनता से परेशान हो गए थे इसलिए मानसिक तनाव से मुक्ति हेतु हिन्दू ईश्वर भक्ति में लीन हो गए इससे भक्ति आंदोलन को बल मिला।
3. **क्रियात्मक शक्ति के नियोजन की आवश्यकता :–** दीर्घकाल तक पराधीन रहने के कारण हिन्दूओं का कर्मशील जीवन नष्ट हो गया था व वे निष्क्रिय

हो गए थे ऐसे में ईश्वर की भक्ति में लीन होकर वे क्रियाशील का अनुभव करने लगे।

4. **जाति–व्यवस्था का जटिल होना :–** भारतीय समाज में उच्च जातियां स्वयं को श्रेष्ठ समझकर निम्न जातियों पर अत्याचार करती थी। इससे निम्न जातियों में असंतोष था भक्ति आंदोलन में ऊंच–नीच जांति–पाति नहीं होती थी। भक्ति आंदोलन ने अछूते तथा निम्न वर्ग के व्यक्तियों के लिए भी मार्ग खोल दिया था।
5. **मंदिरों और मूर्तियों का विनाश :–** धर्मान्ध मुस्लिम ने भारतीय मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ा, ऐसी स्थिति में हिन्दुओं ने ईश्वर उपासना का कोई साधन न देखकर भक्ति मार्ग को ग्रहण करना उचित समझा।
6. **समन्वय की भावना :–** दीर्घकाल तक हिन्दू और मुसलमान एक साथ रहने के कारण हिन्दू तथा मुसलमानों ने अनुभव किया कि दोनों धर्मावलम्बियों में जो ईर्ष्या उत्पन्न हो गई है उसका अन्त कर सद्भावना उत्पन्न की जाए।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य कारणों के नाम लिखने पर 1 अंक एवं 4 कारणों को विस्तार से लिखने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे–1+4=5)

अथवा

मोहम्मद तुगलक की योजनाओं की असफलता के कारण :– मोहम्मद तुगलक एक योग्य व दूरदर्शी शासक था लेकिन वह अपनी दूरदर्शिता पूर्ण योजनाओं को कार्यान्वित करने में असफल रहा। उसकी असफलता के निम्न कारण थे :–

1. **योजनाओं का गलत क्रियान्वयन :–** मोहम्मद तुगलक ने दोआब में कर वृद्धि, राजधानी परिवर्तन, सांकेतिक मुद्रा का चलन आदि योजनाओं को गलत तरीके से क्रियान्वित किया इसलिए उसकी योजना असफल रही।
2. **आकस्मिक परिस्थितियां :–** मोहम्मद तुगलक की योजनाओं के समय अचानक ऐसी परिस्थितियां आ गई जिससे उनका असफल होना स्वाभाविक

था। जैसे– दोआब में कर वृद्धि के समय अकाल पड़ जाना जिससे यह योजना सफल नहीं हो सकी।

3. **कट्टरपंथियों का असहयोग :–** मोहम्मद तुगलक कट्टर मुस्लिम नहीं था उसने उलेमा वर्ग को राजनीति से अलग रखा जिससे उलेमा व कट्टर मुसलमान उससे नाराज हो गए व उसकी नीतियों से असंतुष्ट हो गए।
4. **योजनाएं समय से आगे थी :–** यद्यपि मोहम्मद तुगलक की योजनाएं दूरदर्शी थी लेकिन समय से आगे थी। प्रजा उसे समझ नहीं पाई और कार्यान्वित नहीं कर पाई इसलिए योजनाएं सफल हो गई।
5. **सुल्तान की दानशीलता :–** सुल्तान की दानशीलता भी उसकी असफलता का कारण बनी। पिता की हत्या के निन्दनीय अपराध को ढ़कने के लिए उसने जनता में खूब धन बांटा। उसके लंगर में प्रतिदिन 4000 लोग भोजन करते थे, परिणामस्वरूप उसका राजकोष खाली हो गया।
6. **योग्य परामर्शदाताओं का अभावः–** अलाउद्दीन की तरह मोहम्मद तुगलक को योग्य परामर्शदाता नहीं मिला जो उसकी योजनाओं को प्रतिकूल समय में रोकते इस कारण उसे उचित परामर्श नहीं मिला।

(उपरोक्तानुसार तुगलक के विषय में पांच बिन्दुओं एवं अन्य कोई लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 20. **शिवाजी की अष्टप्रधान व्यवस्था :–** शिवाजी को परामर्श देने के लिए एक मंत्री परिषद होती थी जिसमें कुल आठ मंत्री थे यह अष्ट प्रधान कहलाते थे। इनकी नियुक्ति शिवाजी स्वयं करते थे, प्रत्येक मंत्री को एक विभाग सौंपा जाता था जो अपने कार्यों के प्रति उत्तरदायी होते थे। मंत्रीयों से परामर्श लेने के लिए शिवाजी बाध्य नहीं थे उनके अष्ट प्रधान के नाम व कार्य निम्नांकित थे :–

1. **पेशवा या प्रधानमंत्री :–** इसका प्रमुख कार्य राज्य का निरीक्षण करना राजा की अनुपस्थिति में उसका प्रतिनिधित्व करना व प्रशासन का संचालन करना था। केन्द्रीय शासन में राजा के बाद उसका ही स्थान था।

2. **आमात्य :–** आमात्य अर्थ विभाग का प्रधान होता था, जिसे मजूमदार के नाम से भी जाना जाता था। इसका कार्य आय–व्यय का हिसाब रखना व प्रान्त के हिसाब किताब की जांच करना था।
3. **मन्त्री :–** मंत्री राजा के दैनिक कार्य, दरबार की कार्यवाही का विवरण रखना व राजा के गृह प्रबंध का कार्य करता था।
4. **सचिव :–** यह राजकीय पत्र व्यवहार का कार्य करता था व परगनों की आमदनी का ब्यौरा रखता था।
5. **सुमन्त :–** यह वैदेशिक मामलों को देखता था।
6. **सेनापति :–** सैन्य संचालन व सेना की व्यवस्था करता था।
7. **पण्डित राव :–** यह धर्म व दान विभाग का प्रमुख था और राज्य के प्रमुख राजपुरोहित के दायित्वों का निर्वहन करता था।
8. **न्यायाधीश :–** यह मंत्री न्याय विभाग का कार्य करता था।

शिवाजी की अष्ट प्रधान परिषद में सेनापति को छोड़कर सातों मंत्री ब्राम्हण होते थे और उन्हें राजकोष से वेतन दिया जाता था।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार शिवाजी की अष्ट प्रधान व्यवस्था पर संक्षिप्त पर लिखने पर 2 अंक, 8 बिन्दु के नाम लिखने पर 2 अंक एवं 6 बिन्दुओं का विस्तार से लिखने पर 3 अंक पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे–2+3=5)

अथवा

शिवाजी के चरित्र एवं कार्यों का मूल्यांकन :–

1. **आर्दश तथा उच्च व्यक्तित्व :–** शिवाजी का व्यवहार बहुमुखी तथा उच्च कोटि का देश भक्त एवं राष्ट्र निर्माता के रूप में याद किया जाता है। वास्तव में शिवाजी का व्यक्तित्व इतना आकर्षक था कि उनसे मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हो जाता था।

2. **उज्जवल चरित्र :–** शिवाजी का चरित्र अत्यंत उज्जवल था वे शत्रु की स्त्री को भी माँ तथा बहन के समान समझते थे। वे प्रजा की बहुबेटियों को ही नहीं वरन शत्रु की बहुबेटियों को भी अपनी बेटियां मानते थे।
3. **महान संगठनकर्ता :–** शिवाजी एक महान संगठन कर्ता थे। उन्होंने मराठा जाति को संगठित करके उसे एक सैनिक जाति के रूप में परिणित कर दिया।
4. **महान सेना नायक :–** शिवाजी एक महान सेना नायक थे। वे स्वयं युद्ध का संचालन बड़ी कुशलता के साथ करते थे।
5. **महान विजेता :–** शिवाजी महान विजेता थे। 1956 ई. में शिवाजी ने जावली पर आक्रमण कर अधिकार में किया था।
6. **कुशल प्रशासक :–** एक साहसी तथा सफल सैनिक विजेता ही नहीं वरन अपनी प्रजा के बुद्धिमान शासक थे। शिवाजी जनता की सेवा को ही अपना धर्म सकते थे। शिवाजी ने जमींदारी, जागीरदारीं, ठेकेदारी प्रथाओं को समाप्त किया।

(शिवाजी के विषय में लिखने पर 1 अंक। उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 4 बिन्दुओं पर विस्तार देने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे–1+4=5)

उत्तर 21. भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की व्यापारिक तथा आर्थिक नीति से अंग्रेजी शासन के काल में भारतीय परम्परागत अर्थ व्यवस्था का विनाश प्रारंभ हो गया। आर्थिक प्रभाव निम्नांकित है :–

1. **देशी राजाओं तथा नवाबों का अंत :–** देश के राजे–महाराजे और नवाब आदि उद्योगों के बड़े हितैषी तथा संरक्षक थे। उद्योगों को जो राजदरबारों से संरक्षण सहारा मिलता था वह छिन गया। इस प्रकार से देशी उद्योगों को गहरी ठेस लगी।

2. **दस्तकारों पर अत्याचार :–** ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजनीतिक सत्ता प्राप्त करते ही भारत के कारीगरों अथवा बुनकरों पर अनेक अत्याचार आरंभ कर दिये। इससे जुलाहों को बहुत घाटा हुआ।
3. **कच्चे माल पर नियंत्रण :–** अंग्रेजों ने भारत के कच्चे माल पर अपना पूरा नियंत्रण स्थापित करने का प्रयत्न किया। भारतीयों से सस्ते दाम पर माल खरीद कर ले जा रहे थे और कपड़ा लाकर महंगे दाम पर देते थे।
4. **भारतीय बाजार पर विदेशी वस्तुओं का आधिपत्य :–** विदेश में औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप वहां का आर्थिक ढांचा बदल गया और एक शक्तिशाली और औद्योगिक वर्ग का जन्म हुआ। जिसका उद्देश्य ब्रिटिश उद्योगों का अधिक से अधिक विकास करना था। इस कारण से भारतीय बाजार पर इंग्लैण्ड के बने माल का कब्जा हो गया।
5. इंग्लैण्ड की सरकार द्वारा रेशमी तथा सूती कपड़ों के आयात पर प्रतिबंध।

5 अंक

(इस्ट इंडिया की आर्थिक नीति पर संक्षिप्त में लिखने पर 1 अंक एवं 4 बिन्दुओं को विस्तार देने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

हिन्दू धर्म और समाज में सुधार हेतु आर्य समाज का योगदान :–

1. **धार्मिक सुधार कार्य :–** आर्य समाज ने मूर्ति पूजा, कर्मकाण्ड, बलि प्रथा और स्वर्ग नरक की कल्पना और भाग्य में विश्वास का विरोध किया। उन्होंने वेदों की श्रेष्ठता का दावा किया उसी आधार पर मंत्र पाठ, हवन, यज्ञ पर बल दिया। आर्य समाज ने हिन्दू धर्म को सरल बनाया।
2. **सामाजिक सुधार कार्य :–** उन्होंने बाल विवाह, बहुविवाह, पर्दाप्रथा, सती प्रथा, जाति प्रथा, छुआछूत, अशिक्षा आदि सामाजिक बुराई का विरोध किया और स्त्री जाति, अन्तर्जातीय विवाह एवं विधवा विवाह का समर्थन किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वर्ण व्यवस्था और जाति पाति के ऊंच–नीच व भेदभाव को नहीं माना व समाजिक एकता पर बल दिया। स्वामी दयानन्द

सरस्वती स्त्री शिक्षा के समर्थक थे उन्होंने स्त्री शिक्षा से परिवार व समाज की उन्नति होती है बताया। वे प्राचीन गुरूकुल प्रणाली के समर्थक थे उन्होंने बालक व बालिकाओं के लिए गुरूकुलों की स्थापना की। आर्य समाज स्वामी श्रृद्वानन्द ने हरिद्वार में गुरूकुल की स्थापना की जो आजकल गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। आर्य समाज द्वारा बड़ी संख्या में दयानन्द एंग्ली वैदिक कालेज खोले गए इससे देश में शिक्षा प्रसार को बल मिला। आर्य समाज ने भारतवासियों में स्वाभिमान व देश प्रेम की भावना का संचार किया।

(उपरोक्तानुसार धार्मिक सुधार पर 2 अंक समाज सुधार पर 3 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 22. **भारत छोड़ो आन्दोलन में म.प्र. का योगदान :–**

1942 ई. को अखिल भारतीय कांग्रेस ने अंग्रेजों के विरूद्ध भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पारित किया। इस भारत छोड़ों प्रस्ताव ने देश के वातावरण को एकदम गर्म कर दिया। 9 अगस्त 1942 ई. को महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अब्दुल आजाद, सरदार पटेल, वल्लभ भाई पटेल तथा आचार्य कृपलानी सहित कांग्रेस कार्य समिति के अनेक सदस्यों को गिरफ्तार कर अज्ञात स्थानों पर ले जाया गया।

मध्यप्रदेश में 9 अगस्त 1942 ई. को जैसे ही महात्मा गांधी व अन्य नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार जनमानस को प्राप्त हुआ तो समस्त प्रदेश में स्थान–स्थान पर लोगों में आक्रोश फूट पढ़ा।

जबलपुर में 9 अगस्त को ही स्थापित नेताओं ने बैठक करके एक सप्ताह तक पूर्ण हड़ताल का निर्णय लिया। अंग्रेज अधिकारियों ने स्थिति से निपटने के लिए नगर में धारा–144 लगाकर जनसभाओं को प्रतिबंधित कर दिया। शासन की इस कार्यवाही से जनमानस में और अधिक उत्तेजना फैल गई।

आन्दोलनकारियों ने प्रतिक्रिया स्वरूप जगह—जगह टेलीफोन के तार काटे, रेल की पटरियां उखाड़ी और शासकीय इमारतों को क्षतिग्रस्त कर दिया।

आन्दोलनकारियों ने स्थान—स्थान पर धारा 144 को तोड़ा। विशाल जुलूस निकाले और सार्वजनिक सभाएं आयोजित की। पुलिस द्वारा दर्दनाक दमनात्मक कार्यवाहियां की गई अनेक लोग गिरफ्तार किये गये, अनेक घायल हुए व शहीर भी हुए।

ग्वालियर रियासत में भी भारत छोड़ो आन्दोलन ने शीघ्र ही उग्र रूप धारण कर लिया। ग्वालियर रियासत तथा उज्जैन, शाजापुर, मन्दसौर, नीमच, भिण्ड, मुरैना आदि के गांव—गांव ने इस आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया।

9 अगस्त 1942 ई. को जब महात्मा गांधी तथा अन्य प्रमुख नेताओं को गिरफ्तारी का समाचार इन्दौर पहुंचा, तब वहां स्थिति अत्यंत तनावपूर्ण हो गई। राष्ट्रवादी कार्यकर्ता सड़कों पर निकल आये पूर्ण हड़ताल की घोषणा की गई और जुलूस निकाले गये जिनमें ''करो या मरो'' तथा ''भारत छोड़ो'' के नारे लगाये गये।

इन्दौर के वस्त्र उद्योग के श्रमिक तथा छात्र भी इस आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। इस विवेचना से स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में म.प्र. के देशभक्तों और क्रांतीवीरों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार मध्यप्रदेश के आन्दोलन के सन् एवं तारीख सही लिखने पर 2 अंक एवं विस्तार देने पर 3 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

मध्यप्रदेश में गुप्त कालीन अभिलेख :—

मध्यप्रदेश के सागर जिले में स्थित एरण नामक स्थान से चन्द्रगुप्त का एक लेख प्राप्त हुआ है। जो खंडित अवस्था में है। इसमें समुद्रगुप्त को पृथु, राघव आदि राजाओं से बढ़कर दानी कहा गया है। जो प्रसन्न होने पर कुबेर तथा रूष्ट होने पर यमराज के समान था।

मध्यप्रदेश में गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय के तीन अभिलेख पूर्वी मालवा क्षेत्र से प्राप्त हुए है जिनमें परोक्ष रूप से शत्रु विजय की सूचना मिलती है। इनमें प्रथम अभिलेख भेलसा के समीप उदयगिरी पहाड़ी से मिलता है जो इसके संधि विग्रहिक सचिव वीरसेन का है। इस अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि वह संपूर्ण पृथ्वी को जीतने की इच्छा से राजा के साथ इस स्थान पर आया था। गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय की मृत्यु के बाद उसका पुत्र कुमार गुप्त साम्राज्य का शासक बना। उसके शासन काल से संबंधित मध्यप्रदेश में प्राप्त अभिलेखों की स्थिति भिन्न है :–

1. **मन्दसौर अभिलेख :–** मन्दसौर प्राचीन पश्चिमी मालवा का हिस्सा था। इस अभिलेख में विक्रम संवत 529 (473 ई.) की तिथि अंकित है। जिसकी रचना संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान वत्यभट्टि थे।
2. **सांची अभिलेख :–** इस अभिलेख में यहां आर्य संघ को धन दान में दिये जाने का उल्लेख है।
3. **उदयगिरी गुहालेख :–** इस अभिलेख में शंकर नामक व्यक्ति द्वारा इस स्थान पर पाशर्वनाथ की मूर्ति स्थापित किये जाने का विश्रण है।
4. **तुमैन अभिलेख :–** यह अभिलेख गुना जिले से प्राप्त हुआ है। कुमार गुप्त के पश्चात उसका पुत्र स्कन्दगुप्त गुप्त साम्राज्य का शासक बना। उसके शासन काल का एक अभिलेख मध्यप्रदेश के रीवा जिले में स्थित सुपिया नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख 'सुपिया के लेख' नाम से जाना जाता है। इस लेख में गुप्तों की वंशावली मिलती है।

(उपरोक्तानुसार गुप्त कालीन अभिलेख के विषय पर लिखने पर 2 अंक अन्य कोई 3 बिन्दुओं पर विस्तार देने पर 3 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे–2+3=5**)**

उत्तर 23. महाराणा प्रताप मेवाड़ के सिसोदिया वंश के शासक राणा उदयसिंह के पुत्र थे। मेवाड़ के शासकों ने मुगल सत्ता का निरंतर विरोध किया। यद्यपि 1568 ई. में मुगल सम्राट अकबर ने मेवाड़ की राजधनी चित्तोड़ पर अधिकार कर लिया था। फिर भी मेवाड़ का अधिकांश भूभाग राणा उदयसिंह के अधिकार में ही रहा।

1572 ई. में राणा उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र महाराणा प्रताप मेवाड़ के सिंहासन पर आसीन हुए। महाराणा प्रताप ने राजसिंहासन पर बैठते ही शपथ ली कि जब तक मेवाड़ स्वतंत्र नहीं होगा तब तक वह थाली में खाना खायेंगे और न हीं बिस्तर पर लेटेंगे। महाराणा प्रताप ने आजीवन इस शर्त का पालन भी किया। महाराणा प्रताप द्वारा बार–बार मुगल आधिपत्य को अस्वीकार कर देने के कारण 18 जून 1576 को हल्दीघाटी के मैदान में अकबर और महाराणा प्रताप के मध्य भीषण युद्ध हुआ। जिसमें मुगल सेना के पांव उखाड़ दिये। लेकिन मुगलों की विशाल सेना के सामने महाराणा प्रताप को पराजित होना पड़ा।

महाराणा प्रताप घायलावस्था में अरावली की पहाड़ियों की ओर चले गये। वह स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करते रहे लेकिन अकबर की आधीनता स्वीकार नहीं की। मेवाड़ के कुछ भाग पर अधिकार भी कर लिया था। 1597 में उनकी मृत्यु हो गई। मरते समय अपने पुत्र अमरसिंह को भी अकबर की आधीनता स्वीकार न करने की शपथ दिलाई। जिसका अमर सिंह ने पालन किया और अकबर को मेवाड़ पर अधिकार नहीं करने दिया। इस प्रकार महाराणा प्रताप ने हमेशा मुगलों का प्रतिरोध किया।

(उपरोक्तानुसार वर्णन करने पर 6 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

अकबर एक धर्म सहिष्णु था। उसने धर्म के क्षेत्र में नवीन प्रयोग किया और विभिन्न धर्मों की अच्छाईयों को लेकर 1582 ई. में एक नवीन धर्म की स्थापना की जो दीन–ए–इलाही धर्म के नाम से जाना गया। दीन–ए–इलाही धर्म के प्रमुख सिद्धांत अथवा विशेषताएं निम्नलिखित थी :–

1. ईश्वर एक है, तथा अकबर उसका पैगम्बर व नेता है। दीन–ए–इलाही का अनुयायी बनने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को अकबर से दीक्षा लेना आवश्यक था।

2. सभी सदस्यों को अकबर को साष्टांग प्रणाम करना आवश्यक था।
3. प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्म दिवस पर भोजन का आयोजन करता था।
4. इसके अनुयायियों के लिये मांस खाना निषेध था।
5. इस धर्म को रविवार के दिन ही स्वीकार किया गया था।
6. दाढ़ी रखना प्रतिबन्धित था।
7. दान व उदारता का पालन करना आवश्यक था।
8. जीवों से विमुक्ति व ईश्वर से लगाव।
9. अनुयायियों को उसकी इच्छानुसार जलाया या दफन किया जा सकता था।

(उपरोक्तानुसार पांच बिन्दुओं एवं अन्य कोई लिखने पर कुल 6 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 24. भारत में राष्ट्रीय चेतना के उदय होने के कारण :–

19वीं शताब्दी के अन्त में और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में एक नवीन चेतना का उदय हुआ। इसके मूल कारण निम्नलिखित थे :–

1. **पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार :–** अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से भारत के अनेक भाषा भाषी लोग एक दूसरे के संपर्क में आए इससे राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन मिला।
2. **लार्ड लिटन की अत्याचार पूर्ण नीति :–** लार्ड लिटन ने देशी भाषाओं में छपने वाले समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगाये। उसने देश की संपूर्ण जनता का बल पूर्वक निःशस्त्रीकरण कर दिया। देश में भयंकर अकाल पड़ गया जिसमें लाखों व्यक्ति मर गये। लिटन ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जिससे जनता में भयंकर रोष पैदा हुआ।
3. **समाज सुधार आंदोलनों का प्रभाव :–** राजाराम मोहन राय ने धर्म को आधुनिक सांचे में ढ़ालकर भारतीय समाज में नव जीवन का संचार किया। स्वामी विवेकानन्द ने स्वशासन पर बल दिया। स्वामी दयानन्द ने भारत की आध्यात्मिक श्रेष्ठता सिद्ध की।

4. **भारत का आर्थिक शोषण :–** अंग्रेजों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रहार किया। भारत के परम्परागत उद्योगों तथा दस्तकारियों का अन्त कर दिया। उद्योगों के पतन के बाद श्रमिक भूखे मरने लगे।
5. **भारतीय समाचार पत्र तथा साहित्य :–** समाचार पत्रों ने जनता का ध्यान देश की दुर्दशा, अंग्रेजों के अत्याचारों तथा दमन की ओर आकर्षिक किया और अंग्रेजी सरकार की आलोचना की।
6. **देश में राजनीतिक एकता की स्थापना :–** भारत में राजनीतिक एकता की स्थापना होने के परिणामस्वरूप स्थानीय भक्ति का स्थान देश भक्ति ने ले लिया जिससे स्वतंत्रता का भाव पैदा हुआ।
7. **यातायात के साधनों की उन्नति :–** ब्रिटिश शासनकाल में रेल डाक, तार तथा सड़कों आदि की उन्नति में भी संपूर्ण देश को एक सूत्र में बांध दिया।

6 अंक

(राष्ट्रीय चेतना पर संक्षिप्त में लिखने पर 1 अंक एवं 5 बिन्दुओं पर विस्तार दिये जाने पर 5 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

भारतीय स्वाधीनता अधिनियम की प्रमुख छः धाराएं :–

1. **दो अधिराज्यों की स्थापना :–** 15 अगस्त 1947 ई. को भारत तथा पाकिस्तान दो स्वतंत्र राज्य बना दिए जाएंगे तथा ब्रिट्रिश सरकार उन्हें सत्ता सौंप देगी।
2. **संविधान सभाओं का निर्माण :–** दोनों राज्यों को संविधान सभाएं अपने–अपने देशों के लिए संविधान का निर्माण करेगी।
3. **राष्ट्र मण्डल की सदस्यता:–** भारत और पाकिस्तान दोनों राज्यों का राष्ट्र मंडल में बने रहने या छोड़ने की स्वतंत्रता रहेगी।
4. **भारत सचिव पद की समाप्ति :–** भारत सचिव का पद समाप्त कर दिया जाएगा तथा दोनों देशों को ब्रिट्रिश नियंत्रण से मुक्त कर दिया जाएगा।

5. **ब्रिट्रिश शक्ति का अन्तः—** भारत और पाकिस्तान के संबंध में ब्रिट्रिश ब्रिटिश सरकार की समस्त शक्तियां समाप्त कर दी गई।
6. **1935 ई. के अधिनियम द्वारा अंतरिम सरकार :—** नए संविधान के बनाने तक 1935 ई. के अधिनियम के अनुसार दोनों को दोनों देशों का शासन चलेगा।
7. **ब्रिट्रिश की सन्धियो की समाप्ति :—** भारत के देशी राज्यों पर से ब्रिटिश संप्रभुता समाप्त कर दी गई तथा पुरानी संधियां समाप्त हो गई।
8. **दोनों देशों में गवर्नर जनरल की व्यवस्था** :— भारत और पाकिस्तान दोनों में एक—एक गवर्नर जनरल होगा। जिसकी नियुक्ति उनके मंत्रिमण्डल की सलाह से की जाएगी।

(भारतीय स्वाधीनता अधिनियम के नियम के कोई 6 बिन्दुओं का विस्तार देने पर 6 अंक प्राप्त होंगे)

— — — — —